प्रबंधनविदों ने की आध्यात्मिकता के विकास की वकालत

सूरत में 'कार्यक्षेत्र में आध्यात्मिकता' विषय पर सेमीनार सम्पन्न

वडोदरा के बाद गुजरात के सूरत शहर में 'स्पिरिचुअलिटि एट वर्कप्लेस' विषय पर दूसरी सेमीनार सम्पन्न हुई। गायत्री परिवार यूथ ग्रुप ऑफ सूरत द्वारा आयोजित इस सेमीनार को मुख्य वक्ता आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या-कुलाधिपति देसंविवि. के अलावा कमिश्नर ऑफ इन्फोरमेशन श्री भाग्येश झा, सरदार सरोवर नर्मदा निगम के अध्यक्ष श्री पी.के. लहरी, प्रो. सी. पाण्डुरंग भट्ट-भारतीय प्रबंधन संस्थान कोलकाता, डॉ. सुभाष शर्मा-आई.बी.ए. बैंगलोर तथा डॉ. विवेक विजयवर्गीय ने संबोधित किया।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने वक्तव्य के आरंभ में ही स्पष्ट कर दिया कि धर्म तो अनेक हो सकते हैं, लेकिन सभी धर्मों में अध्यात्म एक ही है और वह है आंतरिक ऊर्जा का जागरण तथा सद्गुणों का विकास। विषय के संदर्भ में उन्होंने कहा कि अध्यात्म विहीन व्यक्ति दिन भर खूब काम करता है, लेकिन शाम को जब वह घर लौटता है तो वह अपने आपको नितांत अकेला अनुभव करता है। यही अकेलापन सारी बीमारियाँ, तनाव आदि का कारण है। जब व्यक्ति अपनी भावनाओं को बाँट नहीं पाता तो वही उसकी नस-नाड़ियों में तनाव उत्पन्न कर हार्ट अटैक और ब्रेन हैमरेज जैसी तरह-तरह की बीमारियों का कारण बनती है।

आध्यात्मिक होने के लिए किसी का मंदिर-मस्जिद में जाना जरूरी नहीं है, जरूरत है जीवन देवता की साधना-आराधना की। व्यक्तिगत एवं संस्थागत कार्यों में आत्मीयता के विस्तार की, पारिवारिक वातावरण के निर्माण की और आंतरिक क्षमताओं के जागरण की। लोग दान-पुण्य को आध्यात्मिकता मानने लगते हैं और इसी से संतोष कर बैठते हैं। वस्तुत: उद्योग-व्यापार जगत में सबके हितों को ध्यान रखा जाये, सब मिलकर अपनी क्षमताओं के सुनियोजन और कामकाज की गुणवत्ता बढ़ाने की भावना विकसित करने लगें-यही अध्यात्म है। इन्हीं भावनाओं के प्रबंधन से कामकाजी जीवन में आने वाले तनाव घटाये जा सकते हैं।

यह सेमीनार दिनांक २३ फरवरी को वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान संकाय के सभागार में आयोजित थी। आरंभ में कुछ मंचासीन महानुभावों-डॉ. विवेक विजय, श्री मदनगोपाल गुप्ता, श्री अनिल जौहरी आदि ने इस प्रकार की सेमीनारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। डॉ. अनिल झा, श्री आर.सी. तोमर, श्री सतीश भाई पादरावाला एवं श्री जिगर ठक्कर ने मंचासीन गणमान्यों का स्वागत किया। इस अवसर पर श्री हेमन्त देसाई एवं श्री राजूभाई दवे भी मुख्य रूप से उपस्थित थे।

सेमीनार के एक और गणमान्य वक्ता श्री पी.के. लहरी ने कहा कि यदि काम ही पूजा है तो उसे बाहर नहीं, भीतर ही खोजा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के प्रतिद्वंद्विता के युग में प्राय: लोग दूसरों को परास्त करने की भावना से कार्य करते हैं और उसी प्रयास में आवेशग्रस्त हो जाते हैं। यह आवेशग्रस्तता परिवार, शिक्षा, व्यवसाय आदि हर क्षेत्र में देखी जा सकती है। उन्होंने कहा कि काम में एक्सेलेंस (निपुणता) तो स्वागत योग्य है, लेकिन जब हम एक्सीड (अति) करने लगते हैं तो तनावग्रस्त हो जाते हैं। इस अति की आवश्यता ही क्या है?

इस प्रबंधन सेमीनार में सूरत और आसपास के औद्योगिक समूहों के मालिकों, वरिष्ठ प्रबंधकों एवं प्रबंधन क्षेत्र से जुड़ी लगभग ३०० विभूतियों ने भाग लिया। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्री भाग्येश झा ने सेमीनार सार प्रस्तुत किया। सेमीनार का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अंकुर मेहता एवं श्री कुंदन द्वारा किया गया। ☯

दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय की सेमीनार

'स्पिरिचुअलिटी एट वर्कप्लेस' पर सेमीनार से पहले वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय द्वारा अपने कुलपति डॉ. रमेशचंद्र जी. कोठारी की अध्यक्षता में सेमीनार आयोजित की गयी, विषय था 'ह्यूमन वैल्यूज़ एण्ड एकेडमिक फील्ड'। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी इसके मुख्य वक्ता थे। इसमें विवि. के विभागाध्यक्षों, आचार्य, सीनेट-सिण्डिकेट के सदस्यों ने भाग लिया।

आदरणीय डॉ. प्रणव जी ने कहा कि जिन शिक्षण संस्थानों का लक्ष्य राष्ट्र-निर्माण है, वे ही अपने विद्यार्थियों को अनुशासित, सद्गुण सम्पन्न बना पाते हैं। उन्होंने शिक्षाविदों को दिये अपने संदेश में देश के कई आदर्श शिक्षा संस्थानों की याद दिलाई, जहाँ के विद्यार्थियों में स्वतंत्रता संग्राम का जज़्बा कूट-कूट कर भरा था और जिन्होंने अपने राष्ट्र को आदर्श नायक प्रदान किये। आज देश में लगभग ३०० विश्वविद्यालय हैं। धन के पीछे भागने वाले प्रबंधकों, डॉक्टर-इंजीनियरों की पीढ़ियाँ तैयार हो रही हैं, लेकिन ऐसे संस्थानों का नितांत अभाव है, जो विद्यार्थियों को त्याग-तितिक्षा की राह पर चलाते हुए आदर्शों के साँचे में ढालने का प्रयास करें। आदरणीय डॉ. साहब ने उपस्थित जनों को शांतिकुंज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय आने और इस दिशा में उनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों को देखने का आमंत्रण भी दिया।

कार्यकर्त्ताओं की संगोष्ठी

२३ फरवरी को सूरत पहुँचने पर आदरणीय डॉ. साहब की टोली सबसे पहले गायत्री शक्तिपीठ बालाजी पहुँची। वहाँ उन्होंने उपस्थित आसपास के हजारों कार्यकर्त्ताओं से चर्चा की। मात्र ३० मिनट की छोटी-सी गोष्ठी में उन्होंने सूरत वासियों से कहा कि इस जिले में ३० शक्तिपीठें हैं। यह जिला अकेला ही ऐसी क्रांति खड़ी कर सकता है जो गुजरात ही नहीं, पूरे देश को दिशा दे सके। इस अवसर पर उन्होंने स्वजनों पर स्नेह-सिंचन के साथ आगामी जन्मशताब्दी वर्ष तक के तीन वर्षों की सक्रियता पर सारगर्भित दिशा-निर्देश दिये। ☯

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए

न्यूज़ीलैण्ड-ऑस्ट्रेलिया में शांतिकुंज की टोली

इन दिनों शांतिकुंज प्रतिनिधि प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री शिवनारायण प्रसाद तथा श्री पुष्कर राज की टोली ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैण्ड के प्रवास पर है। यह अगले वर्ष न्यूज़ीलेण्ड में आयोजित हो रहे अश्वमेध गायत्री महायज्ञ तथा सिडनी के यूथ कैम्प (१५, १६ मार्च २००८) की तैयारियों में जुटी है। देश-विदेश के वे परिजन, जो विचार क्रांति के अभीष्ट अभियान के अंतर्गत इनकी सेवाओं का लाभ लेना चाहते हैं, वे निम्न फोन नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं:-

New zealand
Jayantibhai Mehta
(0064)-6277465
Pravinbhai patel
(0064)-5763819
Australia
Neeraj Ram
(00612)-8824 8543
Anand kumar Jaiswal
(00612)- 9746 8955

शांतिकुंज- देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की यज्ञ-चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठायें

देव संस्कृति विश्वविद्यालय माननीय कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के निर्देशन में यज्ञीय चिकित्सा पद्धति, अर्थात् यज्ञोपैथी को पूरक चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित करने के निरंतर प्रयास कर रहा है। इस दिशा में विश्वविद्यालय के समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग ने विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों के सम्मिश्रण से अलग-अलग रोगों के उपचार के लिए अलग-अलग हवन सामग्रियों का निर्माण किया है।

अथर्ववेद में कहा गया है कि अग्नि में डाली गयी हवन सामग्री विभिन्न रोगों को उसी प्रकार दूर ले जाती है। जैसे नदी पानी के झाग को बहा ले जाती है। आयुर्वेद के प्रमुख ऋषि चरक ने भी कहा है कि आरोग्य चाहने वाले व्यक्ति को नित्य यज्ञ करना चाहिए।

विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों के सम्मिश्रण से जिन रोगों के लिए हवन सामग्री तैयार की गयी है, उसका विवरण इस प्रकार है :- ओजक्षय नाशक, शक्ति वर्द्धक, मानसिक दुर्बलता निवारक, अनिद्रा नाशक, अपस्मार (मिर्गी) नाशक, अवसाद निवारक, मनोग्रसित बाध्यता, मधुमेह नाशक, उच्च रक्तचाप निवारक, अस्थमा (दमा) निवारक, बन्ध्यत्व निवारक (स्त्रियों के लिए), मेदनाशक (मोटापा नाशक), क्षयरोग (टी.बी.) नाशक, कर्कटार्बुद (कैंसर) निवारक, वातव्याधि निवारक, नेत्ररोग निवारक, अश्मरी (पथरी)नाशक, चर्म रोग (त्वक विकार)निवारक, हृदय विकार निवारक, प्रदर रोग (रक्त/श्वेत)निवारक, ज्वर एवं श्वास-कास नाशक, यकृत एवं प्लीहा विकार निवारक, क्लैव्यता नाशक (पुरुषों के लिए), गर्भपुष्टिकर, पक्षाघात नाशक, बवासीर नाशक, अतिसार नाशक, विषम ज्वर (मलेरिया)नाशक तथा सामान्य हवन सामग्री।

उपरोक्त सभी रोगों की हवन सामग्री २०० ग्राम की पैकिंग में विश्वविद्यालय के समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग में उपलब्ध है। परिजन इसे वहाँ से प्राप्त कर सकते हैं। जिन शक्तिपीठों पर यज्ञीय चिकित्सा पर प्रायोगिक कार्य करने की योजना हो, वे विभाग से ०१३३४-२६१३६७ (एक्सटेंशन-५४८७ व ५४७५)पर समय-समय पर सम्पर्क करके या यहाँ आकर आवश्यक सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। ☯

स्काउट प्रशिक्षण शिविर का 'हिमालय वुड बैज कोर्स' सम्पन्न

गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज में स्काउट मास्टर का सर्वोच्च प्रशिक्षण दस दिवसीय हिमालय वुड बैज कोर्स १६ से २५ फरवरी की तारीखों में सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र पंचमढ़ी (म.प्र.) के मार्गदर्शन में आयोजित इस शिविर में उत्तराखण्ड के चमोली, पौड़ी, उत्तरकाशी, टिहरी, देहरादून, हरिद्वार आदि जनपद के स्काउट मास्टर सम्मिलित हुए।

शिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए शांतिकुंज प्रतिनिधि मेजर राजवीर सिंह ने कहा कि स्काउट की वेशभूषा अपने आप में अनुशासन का पर्याय है, जो प्रत्येक स्काउट के जीवन में परिलक्षित होना चाहिए। वस्तुत: अनुशासन ही सफलता और महानता का सोपान है। प्रशिक्षु स्काउट मास्टर्स ने कैम्प फायर में मनोरंजक एवं आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने उनके समक्ष ओजस्वी भाषण, देशभक्ति के गीत, नाटक आदि प्रस्तुत करते हुए स्काउटिंग भावना को चरितार्थ कर दिखाने का आदर्श प्रस्तुत किया।

शिविर संचालक श्री तिवारी ने प्रशिक्षण की आख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमने अपने जीवन में यह बड़ी उपलब्धि पाई कि हम ऐसे शान्त और देवभूमि के प्रांगण में कैम्प में भागीदारी की। प्रादेशिक प्रशिक्षण आयुक्त श्री विष्ट, प्रादेशिक संगठन आयुक्त श्री नरेन्द्र शाह, प्रादेशिक प्रशिक्षण आयुक्त (गाइड) कु. पूर्णिमा पाण्डेय, जिला प्रशिक्षण आयुक्त श्री नरेन्द्र सिंह, जिला सचिव श्री शिवकुमार, श्री वी.वी. गेंदोली आदि ने प्रशिक्षण दिया। दस दिन चले इस शिविर में शांतिकुंज के व्यवस्थापक श्री गौरीशंकर शर्मा, पं. चन्द्रभूषण मिश्र, डॉ. बृजमोहन गौड़ सहित अनेक लोगों ने विभिन्न विषयों पर जानकारी दी। राज्य परिषद् भारत स्काउट गाइड उत्तराखण्ड के उपाध्यक्ष श्री गेंदालाल चौरसिया शिविर संचालक थे। ☯

शांतिकुंज का गौरव

गायत्री विद्यापीठ में कक्षा ५वीं के छात्र एवं शांतिकुंज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री राधेश्याम सोनी तथा श्रीमती श्रुतिकीर्ति सोनी के सुपुत्र चि. आकाश ने उत्तराखण्ड राज्य में आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-२००८ में राज्य स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस सफलता के लिए दिनांक ८ फरवरी को भेल, हरिद्वार के सामुदायिक भवन में आयोजित जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह में श्री चंद्रसिंह ग्वाल-अपर शिक्षा निदेशक द्वारा चि. आकाश को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि शांतिकुंज की इस होनहार प्रतिभा ने विगत दिनों हरिद्वार महोत्सव में आयोजित सामान्य ज्ञान परीक्षा में भी तृतीय स्थान प्राप्त किया था।

चि.आकाश एवं चि.गौतम

गायत्री विद्यापीठ के कक्षा ८ के छात्र एवं शांतिकुंज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री सुखदेव अनघोरे तथा श्रीमती सुशीला अनघोरे के सुपुत्र चि. गौतम ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा २००८ में जिला स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि के लिए उन्हें जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह में जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुरेश सोनी ने पदक एवं ३००रुपये का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। चि. गौतम ने अपनी पुरस्कार राशि देव संस्कृति विश्व विद्यालय के लिए समर्पित कर दी। ☯

दुनिया में बुराई ही नहीं, अच्छाई भी है। उन्हें ढूँढ़ो, चुनो और अपनाओ, ताकि मन को शान्ति, संतोष और प्रसन्नता का अनुभव हो।